वामदेवो गौतमः। उषाः। गायत्री

प्रति ष्या सूनरी जनी व्युच्छन्ती परि स्वसुः। दिवो अदर्शि दुहिता॥ ४.०५२.०१

स्या- सा। सूनरी- शोभननेत्री। जनी- जनयित्री। स्वसुः- रात्र्याः। परि- अवसान इति भावः। व्युच्छन्ती- तमो विवासयन्ती। दिवो दुहिता- दिव्या। अदर्शि- दृश्यते ॥१॥

अश्वेव चित्रारुषी माता गवामृतावरी। सखाभूदश्विनोरुषाः॥ ४.०५२.०२

उषाः- प्रभाती ज्ञानोदयदेवता। अश्वेव चित्रा- तुरग इव चायनीया। अरुषी- रोचमाना। गवाम्- रश्मीनाम्। माता- जननी। ऋतावरी- प्रकृतिनियतिभूतसत्ययुक्ता। अश्विनोः- नक्षत्राधिदैवतयोरित्याधिभौतिके प्राणेशनशक्तिभूतयोरित्याध्यात्मिके। सखा- सखी प्रियेति भावः। अभूत्- अभवत् ॥२॥

उत सखास्यश्विनोरुत माता गवामसि। उतोषो वस्व ईशिषे॥ ४.०५२.०३

उत- अपि च। अश्विनोः- प्राणेशनशक्तिभूतयोः। सखा- प्रियसखी। असि- भवसि। उत- अपि च। गवाम्- रश्मीनाम्। माता- जननी। असि- भवसि। उत- अपि च। उषः। वस्वः- सम्पदाम्। ईशिषे- ईशानं करोषि ॥३॥

यावयद्द्वेषसं त्वा चिकित्वित्सूनृतावरि। प्रति स्तोमैरभुत्स्महि॥ ४.०५२.०४

यावयद्द्वेषसम्- द्वेषं वियोजयन्तीम्। चिकित्वित्- ज्ञानवतीम्। त्वा- त्वाम्। सूनृतावरि- प्रियहितवाङ्मयि। स्तोमैः- मन्त्रैः। प्रति अभुत्स्महि- प्रतिबोधयामः ॥४॥

प्रति भद्रा अदृक्षत गवां सर्गा न रश्मयः। ओषा अप्रा उरु ज्रयः॥ ४.०५२.०५

गवां सर्गा न- उदकधारा इव। भद्राः- कल्याणाः। रश्मयः। प्रति अदृक्षत- दृश्यन्ते। उषाः। उरु- महत्। ज्रयः- तेजः। आ अप्राः- आपूरयति ॥५॥

Dr. Rangaji

WEBOLIM

आपप्रुषी विभावरि व्यावर्ज्योतिषा तमः।उषो अनु स्वधामव॥ ४.०५२.०६

विभावरि- प्रकाशमयि। उषः। आपप्रुषी- आपूरयन्ती। तमः- अन्धकारमज्ञानमयम्। व्यावः- व्यावृणोः। स्वधाम्- आत्मधारणाम्। अनु- अनुसृत्य। अव- नो रक्ष ॥६॥

आ द्यां तनोषि रश्मिभिरान्तरिक्षमुरु प्रियम्।उषः शुक्रेण शोचिषा॥ ४.०५२.०७

उषः। शुक्रेण- शुभ्रेण। शोचिषा- प्रकाशेन। रश्मिभिः- किरणैः। द्याम्- नभः। उरु- विस्तीर्णम्। प्रियम्। अन्तरिक्षम्- द्यावापृथिव्योरन्तरालम्। आ तनोषि- विस्तारयसि प्रकाशयसीति भावः ॥७॥

Dr. Rangani

WEBOLIM